दादी जी मानवता के धरातल पर ही रहीं...

दादी जी को एक कुशल प्रशासिका, आदर्श टीचर, सभी की प्रेरणास्रोत, ममतामयी माँ, पालनहार पिता, अपनी दूरदृष्टि से यज्ञ को आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचाने वाली, निश्चय की महामेरू के रूप में हर किसी ने देखा। आदर्श विद्यार्थी तथा अपने जीवन को सदा मानवता के साथ जोड़कर रखने वाली और आध्यात्मिकता को अपने जीवन में उतारकर जीने वाली दादी जी सबके दिल पर राज करते थे।

जब इन्सान महान बनता है तो कभी-कभी अपनी निजी मानवता को छोड़ देता है, परंतु दादी जी ने महानता के आसमान को छू लेने के बावजूद अपने अंदर के इन्सानी जज़्बे को सदा कायम रखा। एक सामान्य व्यक्ति या मानव के रूप में दादी जी को जब हम देखते हैं तो इन्सानियत और मानवता का अर्थ समझ में आने लगता है। दादी जी के इस बेहद निजी पहलू पर हमारी नज़र शायद न गई हो, लेकिन इस बात पर अगर हम गौर करें तो दिखता है कि कैसे दादी जी हरेक छोटे-बड़े, साधारण से साधारण व्यक्ति का खास ध्यान रखती थीं। सर्दी हो या बारिश, हर आने वाले छोटे-बड़े व्यक्ति के गर्म कपड़े या बरसाती का ध्यान दादी जी रखती थीं। खासकर बूढ़ी माताओं को विशेष एक-एक को बुलाकर उनके आरामदायक आवास-निवास और स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ कर उन्हें सुविधा दिलाती थीं। यज्ञ में कोई बीमार हो या अस्पताल में कोई भी पेशेन्ट हो, दादी जी ने स्वयं मिलकर या किसी को भेजकर हमेशा उनका ख्याल रखा है। किसी पर भी उनके किसी निर्णय से अन्याय न हो इस बात का दादी जी ने सदा ध्यान रखा। दादी ने कभी भी किसी के द्वारा कही-सुनी बातों पर विश्वास कर किसी भी आत्मा के प्रति अपना मत नहीं बनाया और उस व्यक्ति को उस नज़र से नहीं देखा। चाहे आबू निवासी हो या यज्ञ का कोई बाहर का श्रमिक सेवाधारी, हरेक के अच्छे-बुरे समय में दादी जी को उन्होंने अपने साथ खड़ा महसूस किया। जिस पर किसी की भी नज़र नहीं पड़ती थी, ऐसे कोने में चुपचाप खड़े व्यक्ति पर भी दादी जी की नज़र पड़ती थी और खास उस व्यक्ति का ख्याल रखती थीं। मतलब कि दादी जी के इन्सानी जज़्बे के विशाल वृक्ष की छाया से कोई भी वंचित नहीं रहा है।

दादी जी को एक कुशल प्रशासिका, आदर्श टीचर, सभी की प्रेरणास्रोत, ममतामयी माँ, पालनहार पिता, अपनी दूरदृष्टि से यज्ञ को आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचाने वाली, निश्चय की महामेरू के रूप में हर किसी ने देखा है। परन्तु एक आदर्श विद्यार्थी का उनका रूप भी हम अनदेखा नहीं कर सकते। किसी से भी कोई नई बात सीखने और समझने में उनको कभी भारी नहीं लगता था। उम्र से इतनी बड़ी होने के बावजूद अभी-अभी आई हुई कुमारियों को सखीपन का अनुभव वह बड़ी ही सहजता से करा देती थीं। मुरली को पढ़कर ऐसा आत्मसात कर लेती थीं कि जब वे सुनाती थीं तो सुनने वालों को भी वह स्वत: आत्मसात हो जाती थी। 70 वर्ष से नियमित ज्ञानयोग की पढ़ाई करते रहने के बावजूद पढ़ाई के प्रति उनके उत्साह व लगन को किसी नये विद्यार्थी की तरह ही तरोताज़ा देखा गया।

और हाँ, किसी की नज़र तीक्ष्ण हो तो उनके अंदर छिपे हुए इनोसेन्ट बच्चे को उसने अवश्य देखा होगा। किसी को हँसाकर खुद खिलखिलाते हुए हँसना उनकी आकर्षक छवि में चार चाँद लगाता था। दादी जी के व्यक्तित्व में जो चुम्बकीय आकर्षण था उसकी शुरुआत ही उनकी पवित्र और स्वच्छ मुस्कराहट से होती थी। दादी जी की उपस्थिति मात्र आसपास की हवाओं पर इतनी रुहानी खुशबू फैला देती थी कि दूर कोने में बैठा व्यक्ति भी महसूस करता कि वह कहीं आसपास ही हैं।

हरेक के अंदर छिपे हुए गुणों को परखकर उनके उस गुण या कला को बाबा की सेवाओं में लगाने की कला को केवल उन्हीं से सीखा जा सकता है। वे न केवल उस व्यक्ति के गुण और कला की परख करती थीं बल्कि कद्र भी करती थीं और समय पर सबके सामने उसका वर्णन भी करती थीं। जीवन के अंतिम दिनों में शारीरिक अस्वस्थता के कारण भल वह मुख से कुछ बोल नहीं पाती थीं, लेकिन उनकी नज़रों में हमें पहचानने के चिन्ह अवश्य दिखाई देते थे। उस समय भी उनकी एक दृष्टि को पाने के लिए हज़ारों लोग शान्ति और धैर्यता से लम्बी कतार में खड़े रहते थे। दादी जी ने अंतिम श्वास तक अपना हर पल बाबा की सेवा में बिताया। आज भी उनकी ही सेवाओं का मीठा फल हम सब खा रहे हैं। ऐसी हमारी प्यारी दादी प्रकाशमणि, प्रकाश स्तम्भ बनकर आज भी हम सबके साथ और सम्मुख हैं। उनके जीवन और जज़्बे को हमारा शत् शत् प्रणाम और श्रद्धांजली।

रूद्रपुर-उत्तराखण्ड। माननीय मुख्यमंत्री तिवेन्द्र सिंह रावत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सूर्यमुखी।

बुटवल-नेपाल। कुमारों के लिए 'यूथ रिट्रीट फॉर पॉज़ीटिव लाइफ स्टाइल' विषयक त्रिदिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. कमला, ब्र.कु. नारायण, ब्र.कु. हेमन्त,माउण्ट आबू तथा अन्य।

न्युयॉर्क। संस्कृति युवा संस्था,जयपुर हेडक्वार्टर्ड एन.जी.ओ. द्वारा आयोजित 'भारत गौरव अवॉर्ड' सम्मान कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ नॉर्थ अमेरिका की डायरेक्टर ब्र.कु. मोहिनी को उनके मानवता के प्रति उत्कृष्ट कार्यों के लिए ये अवॉर्ड प्रदान किये जाने पर उसे प्राप्त करते हुए ब्र.कु. भूमिका।

पानीपत-हरियाणा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् बी.वी. राम गोपाल,ई.डी., आई.ओ.सी.एल. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भारत भूषण तथा ब्र.कु. हर्षिता।

पठानकोट-पंजाब। अंतर्राष्ट्रीय नशा मुक्ति दिवस पर आयोजित रैली को झंडी दिखाकर रवाना करते हुए नगर के नवनियुक्त विधायक अमित विज, व्यापार मंडल के एल.आर. सोढ़ी, ब्र.कु. सत्या बहन तथा ब्र.कु. प्रताप।

नोएडा-उ.प्र.। सद्भावना भवन में 'क्रियेटिंग योर मिराकल' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मुख्य वक्ता विश्व प्रख्यात जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ ब्र.कु. शिवानी। साथ हैं ब्र.कु. शील तथा शहर के गणमान्य अतिथियों के साथ ब्र.कु. बहनें।

ज़िम्बाव्वे। 'पॉवर ऑफ लव' विषय पर टॉक शो के पश्चात् समूह चित्र में वहाँ के भाई बहनों के साथ ब्र.कु. साधना,किंग्सवे कैम्प दिल्ली।

कायमगंज-फर्रूखाबाद(उ.प्र.)। ज्ञानचर्चा के पश्चात् बैंक मैनेजर अरुण कुमार को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. मिथलेश।

भरतपुर-राज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर गणमान्य लोगों सहित विशाल जनसमूह को राजयोग मेडिटेशन कराते हुए ब्र.कु. बबिता।